पिप्पल गच्छ गुर्वावलि

श्री भंवरलालजी नाहटा

मध्यकालीन जैन इतिहास के साधनों में पट्टावलियों–गुर्वावलियों आदि का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है। जैनधर्म के प्रचारक आचार्यों की परंपरा अनेक शाखाओं में विभक्त हो गई। फलतः जैन गच्छों की संख्या सौ से अधिक पाई जाती है। पिप्पलगच्छ उन्हीं में से एक है जिसके आचार्यों की नामावलि सम्बन्धी कई रचनाएँ गुरु स्तुति, गुरु विवाहलउ, गुरु नुं धूल, गुरु माल, आदि पाई जाती हैं। इस गच्छ की पट्टावलि विस्तार से प्राप्त नहीं हुई, अतः जैसा चाहिए इस गच्छ का इतिवृत्त प्राप्त नहीं होता और न ही प्राप्त रचनाओं में आचार्यों का समय आदि ही दिया हुआ है। मैं ये रचनाएँ कुछ वर्ष पूर्व एक प्रति से नकल कर के लाया था। वे कई वर्षों के पश्चात् यहाँ प्रकाशित की जा रही हैं।

प्राप्त प्रतिमा-लेखों से स्पष्ट है कि ये रचनाएँ पिप्पल गच्छ की त्रिभविया शाखा से सम्बन्धित हैं। इस गच्छ की तालध्वजी आदि अन्य शाखाएँ भी थीं, पर उनकी पट्टावलियाँ प्राप्त नहीं हैं। प्रतिमा-लेखों आदि से कुछ आचार्यों के नामों का ही पता चलता है। संस्कृत गुरु स्तुति से विदित होता है कि यह गच्छ चतुर्दशी को पाक्षिक पर्व मानता था।

बृहद्गच्छ (बड़ गच्छ) की पट्टावलि से स्पष्ट है कि पिप्पल गच्छ वास्तव में उसकी एक शाखा है। जिस प्रकार उद्योतनसूरि ने बड़वृक्ष के नीचे आठ आचार्यों को आचार्यपद दिया और उनकी संतति बड़-गच्छीय कहलाई, इसी प्रकार शांतिसूरि ने भी सिद्ध श्रावक कारित नेमिनाथ चैत्य में आठ शिष्यों को आचार्यपद दिया था। संभवतः पिप्पलक स्थान या पीपल वृक्ष के कारण इस गच्छ का नाम पिप्पलक या पीपलिया गच्छ पड़ा। खरतर गच्छ में भी इसी नाम की एक शाखा जिनवर्द्धनसूरि से चली। वह मालवे के किसी पीपलिया स्थान विशेष से सम्बन्धित प्रतीत होती है। पिप्पल गच्छ का उसी स्थान से सम्बन्ध है या नहीं, यह अन्वेषणीय है।

इस गच्छ के प्रभावक आचार्य शांतिसूरि हुए। संस्कृत गुरु स्तुति के अनुसार चक्रेश्वरी देवी से आप पूजित थे और पृथ्वीचंद्र चरित आपने बनाया। जैसलमेर भंडार की सूची के अनुसार प्रस्तुत पृथ्वीचंद्र चरित की वीर सं. १६३१ वि. सं. ११६१ में मुनिचंद्र के लिये रचना हुई। ग्रंथ परिमाण ७५०० श्लोकों का है। प्राकृत भाषा में यह रचा गया और इसकी १६० पत्रों की ताड़पत्रीय प्रति सं. १२२५ में पाटण में लिखित जैसलमेर भंडार में प्राप्त है।

> "इगतीसाहिय सोलस सएहिं वासाण निव्वुए वीरे।
> कत्तिय चरम तिहीए कित्तियरिक्खे परिसमत्तं ॥
> जो **सव्वदेव** मुणिपुंगव दिक्खिएहिं साहित्ततक्क समएसु सुसिक्खिएहिं ॥
> संपाविओ वर पयं **सिरिचंदसूरि** पूजहिं पक्खमुवगम्म गुणेसु भूरि ॥
> संवेगं बुनिवा(या)णं एयं सिरि **संतिसूरिणा** तेण।
> वजरियं वरचरियं **मुणिचंद**विणेयं वयणाओ ॥"

उपर्युक्त प्रशस्ति से स्पष्ट है कि शांतिसूरि को सर्वदेवसूरि ने दीक्षित किया था और उन्होंने साहित्य,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तर्क एवं दर्शनशास्त्र उन्हीं से सीखा था। आचार्यपद श्रीचंद्रसूरि से प्राप्त हुआ। जिस मुनिचंद्र शिष्य के वचन से इस चरित्र की रचना की गई वे शांतिसूरि द्वारा आचार्यपद पर स्थापित आठ आचार्यों से भिन्न थे। गुरु स्तुति में उन आठ आचार्यों के नाम ये हैं—१ महेन्द्रसूरि, २ विजयसिंहसूरि, ३ देवेन्द्रचंद्रसूरि, ४ पद्मदेवसूरि, ५ पूर्णचंद्रसूरि, ६ जयदेवसूरि, ७ हेमप्रभसूरि और ८ जिनेश्वरसूरि। शांतिसूरि के सम्बन्ध में १७ वीं शताब्दि के दो उल्लेख मिलते हैं जिनके अनुसार आपने सात सौ श्रीमाली कुटुम्बों को श्रीमालनगर में प्रतिबोध दिया था।

पिप्पलगच्छी गुरु बड़ा, श्री **शांति**सूरि सुजान।
प्रतिबोधिया कुल सातसई, श्रीमालपुर अईठाण।
(सं. १६७२ **थिरपुर** में राजसागररचित लवकुश रास)

पुण्यसागर रचित अंजना सुंदरी चौपाई में जोकि सं. १६८९ में रची गई, शांतिसूरि के सम्बन्ध में निम्नोक्त विवरण दिया है।

श्रीवड़ गच्छ गुरु गाइइ, **शांति**सूरि गणधार।
चक्केसरी पद्मावती भगती करइ वार वार ॥
भंगक छेवट्टण भाखीउ धूली कोट समेत।
कुटुम्ब श्रीमाली सात सइ, उगारयो गुण हेत ॥
भोज चुरासी राज मइ, जीत्या वाद विशाल।
शासन जिन सोभाविउ वादी विरुद वेताल ॥
तिण गच्छ **पीपल** थापीउ, आठ शाखा विस्तार।
संवत रुद्र बावीसइ, समइ हुई सुख कार ॥
ते गच्छ दीसई दीपतु, नयर **साचोर** मंभारि।
वीर जिनेश्वरनुं तिहां, तीर्थ प्रगट उदार ॥

उपर्युक्त उद्धरण में वादी वेताल शांतिसूरि को पिप्पल गच्छ स्थापक शांतिसूरि से अभिन्न माना है जो विचारणीय है। वादी वेताल शांतिसूरि से **थारापद** गच्छ प्रसिद्ध हुआ। प्रभावकचरित्र के अनुसार सं. १०९६ में वादी वेताल शांतिसूरि का स्वर्गवास हो गया था और उनके गुरु का नाम विजयसिंहसूरि था। एक ही नाम वाले समकालीन आचार्यों के सम्बन्ध में भूल या भ्रांति होना सहज है। कुछ बातें एक दूसरे के लिये भ्रमवश लिख दी जाती हैं। श्री मोहनलाल देशाई ने भी अपने "जैन साहित्यनो इतिहास" पृष्ठ २०६ में महाराजा भोज द्वारा सन्मानित वादी वेताल शांतिसूरि को पिप्पलगच्छ का स्थापक व धर्मरत्न लघुवृत्ति का रचयिता माना है। दोनों आचार्यों के समय पर विचार करते हुए यह सही नहीं प्रतीत होता। पृथ्वीचंद्र चरित सं. ११६१ की रचना है। इधर वादी वेताल शांतिसूरि का स्वर्गवास सं. १०९६ में हो चुका था। अतः दोनों एक नहीं हो सकते। प्रभावक चरित्र पर्यालोचन में वादी वेताल शांतिसूरि रचित उत्तराध्ययन टीका और तिलक मंजरी टिप्पण का उल्लेख है, पर पाटण भंडार सूची के पृष्ठ ८७ के अनुसार तिलक मंजरी टिप्पण के रचयिता शांतिसूरि पूर्णतल गच्छ के थे। यथा—

श्री शांतिसूरिरिह श्रीमति पूर्णतले (ल्ले) गच्छे वरो मतिमतां बहुशास्त्रवेत्ता
तेनामयं विरचितं बहुधा विमृश्य संक्षेपतो वरमिदं बुध टिप्पिनं भोः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रभावकचरित्र में शांतिसूरि के ३२ शिष्य बतलाये हैं और उन्होंने मुनिचंद्रसूरि को पाटण में प्रमाण-शास्त्र का अभ्यास कराया था, यह लिखा है। उपर्युक्त पृथ्वीचंद्र चरित भी मुनिचंद्र के कथन से रचा गया था। यदि वादी वेताल शांतिसूरि का स्वर्गवास १०९६ में हो गया तो वादी देवसूरि के गुरु मुनिचन्द्र सूरि का उनसे पढ़ना विचारणीय हो जाता है। वादिदेवसूरि के प्रबन्ध के अनुसार उनका स्वर्गवास संवत् ११७८ में हुआ था।

वादी वेताल के गुरु का नाम विजयसिंहसूरि था। तब पिप्पल गच्छ के स्थापक शांतिसूरि के शिष्य का नाम विजयसिंहसूरि था। इनकी श्राद्ध प्रतिक्रमण चूर्णी सं. ११८३ में रचित है। उसकी प्रशस्ति में सर्वदेवसूरि और श्री नेमचंद्रसूरि के शिष्य के रूप में शांतिसूरि का उल्लेख है। यथा—

श्री **सब्बएव** सिरी **नेमचन्द** नामधेया मुनीसरा गुणिणो
होत्था तत्थ पसत्था तेसिं सीसा महामइणो
जे पसमस निदंसणं मुदही दक्खिन्न वारि वारस्स
कव्व रयणाण रोहण, खाणी खमिणो अमियवाणी
सिरियं संति मुणिंदा तेसिं सीसेण मंद मइणोवि
आयरिय **विजयसिंहेण,** विरइया एस चुन्नीत्ति।

१. अंजनारास की प्रशस्ति के अनुसार पिप्पलगच्छ की स्थापना सं. ११२२ में हुई थी, यह समय विचारणीय है।

२. विजयसिंह सूरि—इनसे रचित श्राद्ध प्रतिक्रमणचूर्णी का उल्लेख ऊपर किया गया है। यह ४५९ श्लोक परिमाण की है। सं. ११८३ के चैत्र में इसकी रचना हुई। सं. १४६३ के लेख के अनुसार आपने सं० १२०८ में डीडला के मूलनायक की प्रतिष्ठा की थी।

३. देवभद्रसूरि, ४. धर्मघोषसूरि, ५. शीलभद्रसूरि, ६. पूर्णदेवसूरि—इनका विशेष वृत्तांत ज्ञात नहीं हैं।

७. विजयसेनसूरि—गुरु माला में इनको "पासदेव पट्ट उद्धरण" लिखा है।

८. धर्मदेवसूरि—इन्होंने गोहिलवाड़ के राजा सारंगदेव को देवी के प्रसाद से उसके तीन पूर्वजन्म बतलाए, इससे त्रिभविया नामक शाखा प्रसिद्ध हुई। थाराउद्र में घूघल को राना बनाया व तीन भव बतला के प्रतिबोधित किया। घूघल ने सरस्वती मंडप बनाया था।

९. धर्मचंद्रसूरि—इनके द्वारा प्रतिष्ठित मूर्ति पर संवत् १३७१ का लेख प्रकाशित है। इन्होंने मोख राजा को संघपति बनाया।

१०. धर्मरत्नसूरि—इनका विशेष वृत्तांत अज्ञात है।

११. धर्मतिलकसूरि—इनके द्वारा प्रतिष्ठित प्रतिमा लेख सं. १४३७ का मिलता है।

१२. धर्मसिंहसूरि—इनके उपदेश से गूदिय नगर में जैन मंदिर बना।

१३. धर्मप्रभसूरि—ये थिरराज की पत्नी सिरिया देवी के पुत्र थे। पाल्ह और पेथ सौदागर ने इनकी आचार्यपद स्थापना का उत्सव किया। इन्होंने सं. १४४७ में चंद्रप्रभ मंदिर की प्रतिष्ठा की। गोहिलवाड़ के राजा सारंगदेव के राज्य व ठाकुर साधु के प्रति राज्य में चंद्रप्रभ मंदिर में मंत्री हेमा ने वीर प्रभु का जन्मोत्सव किया, इस उल्लेख वाली एक रचना प्राप्त हुई है। मंत्री हेमा द्वारा कल्पसूत्र बढ़वाने का भी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उल्लेख है। गूंदी नगर में हिंसा निवारण का प्रतिबोध देकर श्रावक बनाये। आपके द्वारा प्रतिष्ठित प्रतिमा लेख सं. १४७६ तक के प्रकाशित हैं।

१४. धर्मशेखरसूरि—इनके द्वाराप्रतिष्ठित प्रतिमाओं के लेख सं. १४८४–८९–९७–१५०३–५–९ के प्रकाशित हैं।

१५. धर्मसागरसूरि—आपके द्वारा प्रतिष्ठित प्रतिमाओं के लेख सं. १५१७–२३–३७ के प्रकाशित हैं। आपके शिष्य विमलप्रभसूरि के पट्टधर सौभाग्यसागरसूरि के शिष्य राजसागर रचित प्रसन्नचंद्र राज रास सं. १६४७ थिरपुर और लव-कुश रास सं. १६७२ जेठ सुदी तीज थिरपुर में रचित प्राप्त है।

१६. धर्मवल्लभसूरि—इनके द्वारा प्रतिष्ठित प्रतिमा लेख सं. १५५३ के प्रकाशित हैं।

गुर्वावलि में यहीं तक की आचार्यों की नामावलि मिलती है। अब अन्य साधनों के आधार से परवर्ती आचार्य आदि का परिचय दिया जा रहा है।

१७. धर्मविमलसूरि—इनसे प्रतिष्ठित प्रतिमा का लेख सं. १५८७ का प्रकाशित है। संभव है यह धर्मवल्लभसूरि के पट्टधर हों।

१८. धर्महर्षसूरि—आपके प्रशिष्य से लिखित सं. १६७० की प्रति का पुष्पिकालेख जैन प्रशस्ति संग्रह में प्रकाशित है। इनके समकालीन पिप्पल गच्छ के अन्य आचार्य लक्ष्मीसागर का उल्लेख सं. १६३९ की प्रशस्ति में मिलता है। इन लक्ष्मीसागरसूरि के समय में ही पुण्यसागर ने नयप्रकाश रास सं. १६७७ एवं अंजना रास सं. १६८९ में रचीं।

पिप्पलगच्छ की इस त्रिभविया शाखा का प्रभाव साचोर और थिरपुर में अधिक रहा, ऐसा प्रतीत होता है। संभव है वहाँ के भंडारों में कुछ अधिक सामग्री—पट्टावलि व इस गच्छ के रचित ग्रंथ प्राप्त हों।

अब इस गच्छ की अन्य शाखाओं के कुछ आचार्यों के उल्लेख प्राप्त हुए हैं जिन्हें यहाँ दिया जा रहा है।

१. वीरदेवसूरि—इनका प्रशस्ति लेख सं. १४१४ का प्राप्त है। आपके शिष्य वीरप्रभसूरि के उल्लेख सं. १४५४-१४६१-१४६५ के ज्ञात हैं। इनके शिष्य "हीरानंदसूरि" अच्छे कवि थे। उनके रचित विद्याविलास पवाडो सं. १४८५, वस्तुपालतेजपालरास सं. १४९४, दशार्णभद्ररास, जम्बूविवाहलो, कलिकालरास सं. १४८९, स्थूलिभद्र बारहमास प्राप्त हैं। आबू के सं. १५०३ के लेख में वीरप्रभ के साथ हीरसूर का उल्लेख है। संभवतः वे हीरसूर आप ही हों।

२. गुणरत्नसूरि—इनके प्रतिमा लेख सं. १५०७-१३-१७ के प्राप्त हैं। इनके समय में आणंदमेरु ने कल्पसूत्र व कालिकाचार्य कथा की भास बनाई। प्रतिमा लेखों से आपकी शाखा का नाम 'तालध्वजि' व आपके पट्टधर गुणसागरसूरि [ले. सं. १५२४,२८,२९] होने का पता चलता है। गुणसागरसूरि के पट्टधर शांतिसूरि का सं. १५४६ का लेख प्रकाशित है।

इनके अतिरिक्त और भी कई आचार्यों के नाम प्रतिमालेखों में मिलते हैं पर उनकी गुरुशिष्य परंपरा आदि का पता न मिलने के कारण यहां उनका उल्लेख नहीं किया गया। वास्तव में यह गच्छ १५ वीं १६ वीं शताब्दि में खूब प्रभावशाली रहा है। फलतः इन दो शताब्दियों के पचासों प्रतिमालेख प्रकाशित मिलते हैं। उनसे उन आचार्यों के समय का ही पता चलता है। विशेष विवरण तो पट्टावलियों के प्राप्त होने से ही मिल सकता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७ वीं शताब्दि तक इस गच्छ के आचार्यों एवं विद्वानों के उल्लेख मिलते हैं। इसके पश्चात् इस गच्छ के आचार्य एवं यतिगण कब तक कौन कौन हुए, इसके जानने के लिये कोई भी साधन प्राप्त नहीं है।

इस गच्छ के विद्वानों के रचित ग्रंथ बहुत ही थोड़े हैं। जिन चार पांच ग्रंथकारों का पता चला, उनका निर्देश ऊपर किया ही जा चुका है। इतने दीर्घ काल में इतने आचार्य व मुनिगण हुए हैं। उनका साहित्य अवश्य ही कुछ विशेष रूप से मिलना चाहिए या संभव है वह इस गच्छ के उपासकों के ज्ञानभंडारों में पड़ा हो। तथा उन ग्रंथों की प्रतिलिपियों का प्रचार अधिक न हो पाया जिससे वे रचनाएँ अज्ञात ही रह गईं।

पिप्पल गच्छ गुरुस्तुति

जज्ञे वीरजिना**सुधर्म्म**गणभृत् तस्माच **जम्बू**स्ततः।
संख्यातेषु गतेषु सूरिषु भुवि श्री**वज्र**शाखाभवत् ॥

तस्यां **चन्द्र**कुलं मुनीन्द्रविपुलं तस्मिन् **बृहद्गच्छता**।
तत्राभूद्यशसः प्रसादितककुभ्श्री**सर्वदेव**प्रभुः ॥ १ ॥

श्री**नेमिचन्द्रा**भिधसूरिरस्मात् जज्ञे जगन्नेत्रचकोरचन्द्रः।
चारित्रलक्ष्मीललितांगहार प्रौप चापोरुशुभानुकारः ॥ २ ॥

वादीन्द्रः कविपुङ्गवैकतिलकः सत्कीर्तिली(ला)सरः।
क्रोडक्रीडदशेषसज्जनमहो चारित्रचूड़ामणिः ॥ ३ ॥

नंद्यादुद्धतभाजनं स भगवान् श्री**शांति**सूरिप्रभुः।
पृथ्वीचंद्रचरित्रसद्ममकरो यो विश्वदत्तोत्सवः ॥ ४ ॥

श्रीमन्**महेन्द्रो विजय**याख्यसिंहो **देवेन्द्रचंद्रः** शुचि**पद्मदेवः**।
श्री**पूर्णचन्द्रो जयदेव**सूरि **हेमप्रभो** नाम **जिनेश्वरस्य** ॥ ४ ॥

सिद्धश्रावककारिते निरुपमे श्री**नेमिचैत्ये** पुरा।
पूज्यैरष्टगुणा निजपदे संस्थापयांचक्रिरे ॥
श्रीमत्**पिप्पलगच्छ**नायक तया विज्ञाय होराबलं।
विख्याता भुवि **शांतिसूरि**गुरवः कुर्वन्तु वो मंगलम् ॥ ५ ॥

चक्रेश्वरी यस्य पुपोष पूजां **सिद्धो** भवद् यस्य गिरा नमस्यः।
श्री**वृक्ष**गच्छाम्बरसप्तसप्तिः श्री**शांतिसूरिः** सुगुरुर्बभूव ॥ ६ ॥

तदनु मदनुहंता शाशनो द्योतकारी, जयति **विजयसिंह**सूरि भूरिप्रतिष्ठः।
सबलकलिविघातं संयमासिप्रहारैरकृतसुकृतपात्रं भव्य कोकैकभानु ॥ ७ ॥

तत्पट्टपंकेरुहराजहंसः श्री**देवभद्रो** गुणभृद्रराज।
उवास यः सज्जनमानसेषु निर्दूषणखेलितशुद्धपक्षः ॥ ८ ॥

तदन्तरं निर्जितमोहमल्लः श्री**धर्म्मघोषः** सुगुरुर्गरीयान्।
संसारपूरेण तु नीयमानं ररक्ष यो धार्म्मिकलोकमेक ॥ ९ ॥

सच्चन्द्रसूर्याविव तस्य पट्टे बभूवतुर्द्धोर्जायतौ गणेशौ।
श्री**शीलभद्रः** प्रथमः प्रवीणः सूरिस्ततः श्रीपर **पूर्णदेवः** ॥ १० ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विजयसेनगुरुस्तदनंतरं विजयते वसुधातलमंडनः ।
निवड्कर्म्मरिपून् समसायकैरपजहार विकारविरागवान् ॥ ११ ॥

भवत्रयं यः कलयांचकार ज्ञानोदधिर्गौतमवद्गणेशः ।
नरेन्द्रसामन्तसहस्रवंद्यः श्री**धर्म्मदेवो** जयताद्गणेशः ॥ १२ ॥

तन्न...मुख्यो वृतस्य पक्षः **चतुर्द्दशीपक्ष**विचारदक्षः ।
समग्रसिद्धांतविलासवेदी श्री**धर्मचन्द्रो** जयताद्गतां ॥ १३ ॥

तत्पट्टशैलेन्द्रमृगेन्द्रतुल्यः श्री**धर्मरत्न**सुगुरुश्चकास्ति ।
महाव्रतैः पंचभिरेव योसौ पंचाननत्वं बिभरांबभूव ॥ १४ ॥

स्तुतिं गुरूणां सुगुणैर्गरूणा दिनोदये यः पठति प्रमोदात् ।
तस्यानिशं भक्तितरंगभाजो लब्धिर्विशाला परिरम्भणी स्यात् ॥ १५ ॥

इति श्री गुरुस्तुति समाप्तः ॥

२

पीपल गच्छ गुरु विवाहलु

पास जिणिंदि पसाउ कीउ, धरिणिंद्रि जस आपिय ज्ञान । त्रिहुं भव सुद्धि इम जाणीए ।
पीपल गच्छि संतूठिय, सरसति सतगुर सकति वखाणीइ ए ॥ १ ॥
सारंग राय सुपरि कहीय, त्रिहुं भवंतर **धर्म्मदेवसूरि** ।...त्रिहुं भव सुद्धि०
सोल कला **धर्म्मचंद्रसूरि**, संघपति कीधउ **मोख** नरिंद ।...त्रिहुं भव सुद्धि०
आठ महासिध प्रगट हूय, तप तेज तरणि **धर्म्मरत्नसूरि** ।...त्रिहुं भव सुद्धि०
धरमतिलकसूरि गुरुतिलको, तिहुयणि मोहिओ वाणि रसाल ।...त्रिहुं भव सुद्धि०
अनागत बुद्धि **धर्म्म सिंघसूरि, गूदियनयरि** प्रसाद मंडाविय ।...त्रिहुं भव सुद्धि०
थिरराज सिरियाएविसुत बांधव, सहि जयवंत रवितलि ।...त्रिहुं भव सुद्धि०
पाल्ह पेथ सौदागरूए, ठविय पाटसिरि **धर्म्मप्रभसूरि** ।...त्रिहुं भव सुद्धि०
सतितालइ श्रीसंघ सहितो, देव चंद्रप्रभ प्रतिकराविय ।...त्रिहुं भव सुद्धि०
भविक त्रिभविया गुरु नमउ, जिम मन वंछित पामउ नवनिहि ।...त्रिहुं भव सुद्धि०

॥ इति गुरु वीवाहलु समाप्त ॥

३

गुरुनु थूल

स्वामिणि सरसति वीनवूं तुझप्रति, देवीय दइ इति विपुलमति ।
भाव उपन्न चित्ति, सगुण गणधर भत्ति, भणिस भोलिम भवियण सुणउ ए ॥
सवि सुणउ भवियण भणिस भोलिम, भत्ति चित्ति निरंतरो ।
सिद्धंत सारविचार संसइ, सवे भंजइ मनिवरो ।
नव तत्त नव रस रंगि रसना, वयणिवाणी जस तणी
दिणिदिणिहि दहदिशि किति अहनिशि, तूं पसाइं स्वामिणी ॥ स्वा० ॥ १ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पीपलगच्छ गुर गरुश्रो गणधर, श्रीय**धर्मदेव**सूरि हऊया प्रवर।
त्रिभवन सुद्धि जस गुरिजगि भाखीउ, दाखीउ प्रगट प्रमाण पहु॥
पहु प्रगट दाखिय भव्व भाखिय, राउ **सारंग** दे तणो।
अनेकि नेकि प्रमाण पयड़ी, भणूं केता गुण घणा।
श्रीधर्मचंद्रह चंदयम जगि, मोहतिमर विहंडणो।
तस पाटि **धम्मह**सूरि **रयण**ह, गच्छ **पींपल** मंडणो॥ पीपल० ॥ २॥

य(जि?)णवर प्रणीत पयासीग्र, धम्म धर्म**तिलक**सूरि सूरिवर।
तस तणइ अनक्रमि श्रीय **धर्मसंघ** सूरि तासपाटि श्री**धर्मप्रभ**सूरि।
तस पाटि **धर्मप्रभ**सूरि, गुर वर टामि **गूंदी** सोहए।
अबुध बुध जन सयल, सावइ तींह प्रति पड़िबोह ए।
गरूय गुर पन्नत तत्तह, झाय झाण निरंतरो।
कस्तूरि अगर कपूर चंदनि, धुव खेवइ यणवरो॥ यणवर० ॥ ३॥

जयवंतु यण शासणि सोहए, मोहए मणउ भवियण तणांए।
सकल कला संपन्न सुहजि सुन्दर, मंदिर महिमानिधान नर॥
नरनिपुण सुंदर महिम मंदिर, चतुर गुर दया पुरो।
विवेक विनय विचार वक्ता, न कोइ समवड़ि नरवरो॥
संगति सुखनधि शोक नासइ, घणउं बहु गुणवंतश्रो।
कंमित्त मत प्रति सूरि सद्गुर, तेजि तपि जयवंतउ॥ जयवंतु० ॥ ४॥

॥ इति गुर नु धुल समाप्त ॥ छः॥

४

पींप्पल गच्छ गुर्वावलि-गुरहमाल

वीरजिणेसर पाय, समरीय सरसति सामिणीय।
वरणि, सुगुरुवर राय, **पीपल** गच्छ अलंकरण॥ १॥

चंद्र गच्छि सुविसाल, **संति**सूरि गुरु वरणीए।
निम्मल कीर्ति माल, जगि सचराचर लहलह ए॥ २॥

बोलइं बाल गोपाल, **सांति**सूरि जसु पयडु जगे।
जीतउ दूसम कालु, **विजयसंह** सूरि तासु पटे॥ ३॥

धर्म**विजयु** जणि कीधु, दूसम दल बलु निरजिणीउ।
विजयसिंह सूरि लीधु, सुजस सब्बहु जगि सासतउ॥ ४॥

तासपटि देव **भद्र**, सूरि राउ प्रसंसीए
गरूउ गुणहसमुद्र, मानमहातमि आगलउ॥ ५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धर्मघोष सूरि राउ, धरम माग प्रकास करो।
प्रह ऊठी गुरु पाय, पणमउ भविया एक मनि ॥ ६ ॥

अविचलु जिणवरु धम्मु, अविचलु संजम भरु लियउ।
धम्मघोष सूरि जम्मु, धनु धनु महि मंडलि भणउ ॥ ७ ॥

तसु पटि गरुअ प्रमाणु, **सीलभद्र** सूरिहि रयणु।
अकल अगंजिय माण, **पूर्णदेव**सूरि वरणीए ॥ ८ ॥

विजयसेन सूरि जाणि, **पासदेव** पट उद्धरण।
महिमा मान प्रमाणि, महिमंडलि महिमागलउ ॥ ६ ॥

धनु धनु **धर्मदेव** सूरि, **सारंग** रा प्रतिबोधिउ।
ऊगमतइ नितु सूरि, सुहगुरु नितु नितु पणमीए ॥ १० ॥

त्रिनि भव **सारंग** राय, देवाएसिहिं गुरि कहीय।
घूघल जग विक्खाय, पडिबोही त्रिनि भव कहीया ॥ ११ ॥

घूघल राणि कीधु, **थाराउद्रे** वर नयरे।
उतिम जगि जस लीधु, **सरसति** मंडपु कारविउ ॥ १२ ॥

गोअम गुरु निसंकु, **धर्मदेव** सूरि अवतरिउ।
तसुपटि गयण मयंकु, **धर्मचंद्र** सूरि गुरु रयणु ॥ १३ ॥

मयण महा भड़ माण, लीलां दूसमि निरजिणीउ।
धरम रत्न सूरि जाणु, धम्म धुरंधर अवतरिउ ॥ १४ ॥

धर्म तिलक सूरि धीरु, **पींपल** गच्छह मंडणउ।
मोह मयण भड़ वीरु, जीतउ लीला बाहुबले ॥ १५ ॥

धरमसिंह सूरि सीहु, विसम महाभड़ वसि करण।
धरम काज धुरि लीह, लहइ वीरु कविता गुणिहिं ॥ १६ ॥

तसुपटि महियलि भाणु, **धर्मप्रभ**सूरि गुरु गरुओ गुणि।
आगम छंद प्रमाण जाण, राउ जयवंतु जगे ॥ १७ ॥

सुललित वाणि रसालु, **धर्मशेखर** सूरि गुरु पवरो।
नामिहिं ऋधि विसालु, जगि जयवंता जाणीइ ए ॥ १८ ॥

राय राणा दीइ मान, गरूया गुरु गुण गाईइ ए।
पार न लाभइ जान, **धर्मसागर** सूरि धर्म निधे ॥ १६ ॥

महिमावंत अपार, श्री **धर्मवल्लभ** सूरि जगि जाणीइ ए
ज्ञान तणउ भंडार, बालापणि पट ऊधरउ ए ॥ २० ॥

गुण गण रयण विशाल, गुरह माल भवियण सुणउ।
उम्मूली मोह जाल, भव समुद्द लीलां तरउ ॥ २१ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीर जन्मोत्सव में

जिणवर जन्मि करइ सोमाइ, तइ नइं राखइ देवि अंबाई।
पीपल गच्छ परधान मुणीजइ, श्री धर्म्मप्रभ सूरि प्रणमीजइ ॥ ५ ॥

देसाहिव्व अति साहस धीरो, श्री सारंगदेव गुण गम्भीरो।
कल्पवंचावइ साहसधीरो, हेमु मंत्री अति सविचारो ॥ ६ ॥

५

वीरजन्माभिषेक

सौधर्म्मवासी वरदो विमानः द्वात्रिंशलक्षाधिपः समानाः।
सौधर्म्मनामा हरिराजगाम श्रीवीरजन्मोत्सवकर्तुकामः ॥ १ ॥

अपूर्वसम्मदः पूर्व दिक्पतिः पूर्वदिग्मुख।
स्नानसिंहासनं भेजे शक्रः क्रोड़ीकृतप्रभुः ॥ २ ॥

अहो भविक लोको! धर्म्म प्रभावको द्वादशव्रतपालकु सावधानतया समाकर्ण्यता 'अहो भविक लोक पुण्य प्रभावकु! सावधान थिका सांभलुः। हुं सौधर्म्मइ देवलोकि। सौधर्म्मवतंसि विमानि बत्रीस लाख विमान तणइ परिवारि अनेकि देव देवांगना तेहे परवर्यु हुंतु। ईणइ भरतखेत्रि मध्यम खंडि **गोहिलवाडि** देसि राजि श्री **सारंगदेव** तणइ राजि। **ठाकुर** साधु तणइ प्रतिराजि आठमा तीर्थंकर श्री **चन्द्रप्रभस्वामि** तणइ भुवनि। श्री **धर्म्मप्रभसूरि** तणइ कल्पि वाच्यमानि मंत्रीश्वर **हेमा** तणइ उपरोधि चरम तीर्थंकर श्री **महावीर** तणु जन्म जाणी महोच्छव करिवा आव्या छउं ॥ छ ॥

इशानवासी वर इन्द्रराजश्चतुर्भुज, शूलधृतौ करौ च।
वृषेण आद्यो वृषवाहनश्च देवैः कृतं पुष्पकमास्थितोहं ॥ १ ॥

इहांतरे घोषनिनादबोधितो धृतो विमानैरिह चागतोहं।
संख्येय लक्ष्यैः किल अष्टविंशतैः समागतो वीरमहोत्सवेन ॥ २ ॥

ईशानकल्पादुत्तीर्य तिर्यग् दक्षिणवर्त्मना।
एत्यं नंदीश्वरं दक्षैशाना रतिकरे गिरौ ॥ ३ ॥

अहो श्रावकाः पुण्यप्रभावकाः सकलकल्याणकारकाः सावधानतया श्रूयतां। अहमीशानदेवलोक तउ अष्टाविंशति विमान लक्षैरिह वीरमहोत्सवेन गुंदिकायां समागतो वर्त्तामहे ॥ अहो श्रावकु पुण्यप्रभावकु सकल कल्याणकारक सावधान थिका सांभलु। हुं ईशान देवलोक तु अठावीस लाख विमान तणउ अधिपति स्वामी। शूलपाणी वृषभवाहन हुंतउ। महाघोषा घंटा तणइ निनादि करी। पुष्पकविमानरूढः ईशान कल्पतु दक्षिण दिशिई ऊतरी नंदीश्वर तणइ मार्गि आवी **गुहिलवाडि** देसि राज श्री **सारंगदेव** तणइ राजि ॥ १ ॥ छ ॥

सनत्कुमाराधिपतिः सुरेन्द्रः समागतो जन्ममहोत्सवाय।
महच्चभक्तयाभिरभार संयुतः सुरासुरैः कांचनचूलिकायां ॥ १ ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आगाद्द्वादशभिर्लक्षैः वृतो वैमानकैः सुरैः ।
सनत्कुमारः सुमानो विमानस्थः प्रभो पुरः ॥ २ ॥

अहो भविक लोको धर्म्मार्थसार्थको द्वादशव्रत पालकः सावधानतया श्रूयतां । अहो ! पुण्यप्रभावकु श्रावकु सावधान थिका सांभलउ । हुंबार लक्ष विमान तणउ अधिपति स्वामी अनेकि देव देवी तणे परिवारि परिवर्यउ हुंतउ ईणइं जंबूद्वीप दक्षिण भरतार्द्धि मधिमखंडि **गोहिलवाड़ि** देशि राज श्री **सारंगदेव** तणु राजि ॥ १ ॥ छ ॥

माहेन्द्राधिपतिः सुरासुरव्रतो संसेव्यते स्वर्गम् ।
लक्षाष्टाधिप संश्रितो सुरवधू संवीज्यते...चारै ॥

इत्थं वीरमहोत्सवं च विधिना ज्ञात्वा हरि संस्मृन् ।
श्रीवत्सांकित नाम देवसदनं हेमं विमानं श्रितं ॥ १ ॥

माहेन्द्राष्ट विमाने लक्षैर्युक्तो महर्द्धिभिः ।
श्री वत्साख्य विमानेन प्रभो रम्यरण्र्णमागतम् ॥ २ ॥

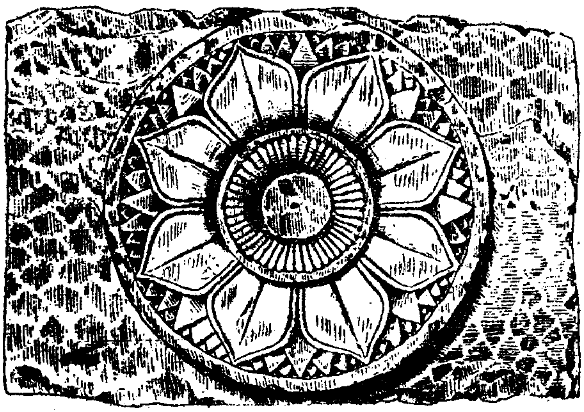

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org